

कृषि संसार

WEEKLY KRISHI SANSAR

All Subject to Patiala Jurisdiction.

E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

RNI Regd. No. T/PB/2024/0508/3389/1059 • Chief Editor : Jagpreet Singh • Issue Dt. 01-02-2025 • Vol.1 No.1 • H.O. : # 9-A, Ajit Nagar, Patiala-147001 (Pb.) • Mob. 98151-04575 • Page 8



किसानों को जागरूक करते कृषि अधिकारी।

गेहूं के लिए तापमान का बढ़ना नुकसानदेह : मुख्य कृषि अफसर

मुख्य कृषि अफसर पटियाला डॉ. जसविन्दर सिंह ने अलग-अलग गांवों में बीजी गेहूं की फसल का निरीक्षण करने के लिए ब्लॉक स्तर पर टीमों का गठन किया, जिससे गेहूं की ताज़ा स्थिति अनुसार किसानों को एडवाइजरी जारी की जा सके। उन्होंने बताया कि मौजूदा दिनों में दिन और रात का तापमान सामान्य से अधिक चल रहा है। उन्होंने बताया कि यदि तापमान इसी तरह बढ़ता रहा, तो गेहूं का झाड़ घटने का खदसा हो सकता है।

कश्मीर में चिनार के पेड़ों का बन रहा है आधार कार्ड!

जम्मू-कश्मीर सरकार चिनार के पेड़ों का आधार कार्ड बना रही है। असल में चिनार के पेड़ों के संरक्षण के लिए 'डिजिटल ट्री आधार' कार्यक्रम शुरू किया गया है। शहरीकरण के कारण खतरे का सामना कर रहे इन वृक्षों का एक व्यापक डाटाबेस तैयार किया जाएगा।

जम्मू-कश्मीर का सांस्कृतिक और पारिस्थितिक प्रतीक चिनार के पेड़ों को 'जियो-ट्रैग' और क्युआर कोड से लैस किया जा रहा है, जो इसकी भौगोलिक स्थिति, स्वास्थ्य और बढ़ने के क्रम की जानकारी रिकॉर्ड करेंगे, ताकि संरक्षणकर्ता आंगों को परिवर्तनों का पता लगाने और जोखिमपूर्ण कारकों को दूर करने में मदद मिले। इस अभियान में भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी.आई.एस.) समेत आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य चिनार के पेड़ों को शहरीकरण, वनों की



काटाइ और ठिकानों को होने वाले नुकसान आदि से बचाना है। इस परियोजना का नेतृत्व जम्मू-कश्मीर वन विभाग का जम्मू-कश्मीर वन अनुसंधान संस्थान (एफ.आर.आई.) कर रहा है। क्यू.आर.आधारित डिजिटल प्लेट को सर्वेक्षण में शामिल प्रत्येक चिनार के पेड़ पर चिपकाया जाता है। प्रत्येक पेड़ को आधार जैसी एक विशिष्ट आई.डी. दी जाती है, जिसमें पेड़ का सर्वेक्षण किए जाने का वर्ष, वह किस ज़िले में स्थित है और आसान पहचान के लिए एक क्रमांक दिया जाता है।

एफ.आर.आई. के परियोजना समन्वयक सैयद तारिक ने कहा कि, "चिनार हमारी संस्कृति का एक हिस्सा है। हम चिनार की कुल संख्या, उनकी स्थिति, उनकी ऊंचाई, परिधि आदि जानने के लिए एक सर्वेक्षण कर रहे हैं। इसलिए, हमने पेड़ों की जियो-ट्रैगिंग की यह पहल की है।" उन्होंने कहा कि अब तक लगभग 28,500 चिनार के पेड़ों की पहचान, सर्वेक्षण और उनके आंकड़ों को अद्यतन किया गया है तथा यह प्रक्रिया जारी है।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा
मार्च 2025 में लगाए जा रहे

किसान मेले

पी.ए.यू. कैप्स, लुधियाना में
दो दिवसीय किसान मेला 21 व 22 मार्च

कृषि संसार द्वारा इन मेलों पर स्टाल लगाए जाएंगे
और नई मैंबरशिप हेतु बुकिंग की जाएगी।

नाग कलां जहांगीर
(अमृतसर)
5 मार्च

बल्लोवाल सौखड़ी
(शहीद भगत सिंह नगर)
7 मार्च

फरीदकोट
11 मार्च

गुरदासपुर
13 मार्च

बठिण्डा
18 मार्च

रौणी (पटियाला)
25 मार्च

तीन दिवसीय पूसा कृषि विज्ञान किसान मेला, दिल्ली में 24 से 26 फरवरी तक

आज दुनिया के कुछ सबसे शुष्क क्षेत्रों में पहले से ही जबरन पलायन दिखाई दे रहा है। जैसे-जैसे भूमि अनुपयोगी होती जाती है और खेती विफल होती जाती है, परिवारों और समुदायों के पास अक्सर स्थानांतरित होने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता।

हाल के दशकों में पृथ्वी की तीन-चौथाई से अधिक भूमि स्थायी रूप से शुष्क हो गई है। जलवायु संकट के प्रभावों से जूझ रही दुनिया के लिए शुष्क भूमि का विस्तार होना नई चिंता पैदा करता है। मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र कन्वेशन द्वारा जारी की गई रिपोर्ट से पता चलता है कि 2020 तक के तीन दशकों में पृथ्वी की लगभग 77.6 प्रतिशत भूमि ने पिछले 30 साल की अवधि की तुलना में शुष्क परिस्थितियों



का अनुभव किया। उन्हीं तीन दशकों में, शुष्क भूमि का विस्तार लगभग 43 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में हुआ जो अंटार्कटिका को छोड़कर पृथ्वी की सभी भूमि का 40.6 प्रतिशत हिस्सा है। इस समय सीमा के भीतर, वैश्वक भूमि का लगभग 7.6 प्रतिशत क्षेत्र शुष्कता की सीमा को पार कर गया। अधिकांश आर्द्र भू-भाग शुष्क भूमि में परिवर्तित हो गए, जिससे कृषि, पारिस्थितिकी तंत्र और उन पर निर्भर लोगों पर गहरा असर पड़ा।

वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि दुनिया ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन पर अंकुश नहीं लगाती है, तो इस सदी के अंत तक आज के आर्द्र क्षेत्रों का 3 प्रतिशत अतिरिक्त क्षेत्र

शुष्क भूमि में परिवर्तित हो जाएगा। वैज्ञानिकों की नई रिपोर्ट वैश्वक शुष्कता रुझान तथा भविष्य के अनुमान के बारे में सऊदी अरब के रियाद में आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में प्रस्तुत की गई। यह अब तक का सबसे बड़ा संयुक्त राष्ट्र भूमि सम्मेलन था। पश्चिम एशिया में यह पहली बैठक थी। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो शुष्कता के प्रभावों से व्यापक रूप से प्रभावित है। रियाद बैठक में पहली बार शुष्कता के संकट को वैज्ञानिक स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया गया। मानव-जनित जलवायु परिवर्तन इस संकट का प्राथमिक चालक है। बिजली उत्पादन, परिवहन, उद्योग और भूमि-उपयोग परिवर्तनों से होने वाले उत्सर्जन ग्रह को गर्म कर रहे हैं और वर्षा के पैटर्न, वाष्णीकरण दर और पौधों के जीवन

को बदल रहे हैं। ये स्थितियां बढ़ती शुष्कता को रेखांकित करती हैं।

कुल मिलाकर विश्व स्तर पर शुष्क भूमि का विस्तार हो रहा है। 2020 तक 2.3 अरब लोग यानी दुनिया की आबादी के एक-चौथाई से भी ज्यादा लोग विस्तारित शुष्क भूमि में रह रहे थे। शुष्कता से संबंधित भूमि क्षरण, जिसे मरुस्थलीकरण के रूप में जाना जाता है, मानव कल्याण और पारिस्थितिक स्थिरता के लिए एक गंभीर खतरा है। इस दिशा में ठोस कार्बाई के बिना भविष्य और भी अधिक निराशाजनक हो सकता है। सबसे खराब उत्सर्जन परिदृश्यों के तहत, सदी के अंत तक पांच अरब लोग शुष्क भूमि

मुकुल व्यास

पर रह सकते हैं। ऐसी स्थिति का मतलब होगा मिट्टी का क्षय, जल संसाधनों की कमी और मानवता के बड़े हिस्से के लिए पारिस्थितिकी तंत्र का ढहना।

आज दुनिया के कुछ सबसे शुष्क क्षेत्रों में पहले से ही जबरन पलायन दिखाई दे रहा है। जैसे-जैसे भूमि अनुपयोगी होती जाती है और खेती विफल होती जाती है, परिवारों और समुदायों के पास अक्सर स्थानांतरित होने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता। इससे वैश्वक स्तर पर सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियां बढ़ती जाती हैं। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि समस्त भूमि का पांचवां हिस्सा अचानक पारिस्थितिकी तंत्र के परिवर्तनों से गुजर सकता है। इनके प्रभावों से जंगल घास के मैदानों में बदल सकते हैं। दुनिया के कई पौधों और जानवरों की प्रजातियां विलुप्त हो सकती हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के बारे में एक अन्य अध्ययन में दुनिया के ग्लेशियरों के समक्ष आसन्न संकट को रेखांकित किया गया है। दुनिया के कई ग्लेशियर पिछले हिस्युग के दौरान बने थे। ये ग्लेशियर हजारों सालों से अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों और ध्रुवीय क्षेत्रों में विद्यमान हैं। लेकिन अनेकों वाले समय में इस स्थिति में बड़ा बदलाव हो सकता है। एक ताजा अध्ययन से पता चलता है कि इस सदी के अंत तक दुनिया के आधे से ज्यादा ग्लेशियर गयब हो सकते हैं। स्विट्जरलैंड और बेल्जियम के वैज्ञानिकों ने कार्बन उत्सर्जन के विभिन्न परिदृश्यों के तहत ग्लेशियरों की संभावित क्षति का अनुमान लगाया है। उन्होंने पृथ्वी के सभी ग्लेशियरों को ध्यान में रखा जिनकी संख्या दो लाख है। अध्ययन से मिले अंकड़े डराने वाले हैं। यदि कार्बन का उत्सर्जन उच्चस्तर पर हुआ तो सभी ग्लेशियरों में से 54 प्रतिशत तक ग्लेशियर

गयब हो सकते हैं। आल्प्स में यह संख्या 75 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। पिछले साल किए गए एक अध्ययन से पता चला था कि हिमालय के ग्लेशियर भी तेजी

को और बढ़ाएगा। जैसे-जैसे पृथ्वी की सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करने की क्षमता कम होती जाती है, सूर्य से अधिक ऊर्जा परावर्तित होने के बजाय अवशोषित होती है। इससे ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन और भी गंभीर हो जाता है।

भविष्य में ग्लेशियर क्षति का अनुमान लगाने के लिए शोध दल ने ऐतिहासिक ग्लेशियर द्रव्यमान, कार्बन उत्सर्जन और



से पिघल रहे हैं और ग्लोबल वार्मिंग के जारी रहने पर सदी के अंत तक उनके द्रव्यमान में 80 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है।

नए अध्ययन के मुख्य लेखक और ग्लेशियर वैज्ञानिक हैरी जेकोलारी ने कहा कि ग्लेशियर दुनिया के ग्लेशियरों के समक्ष आसन्न संकट को रेखांकित किया गया है। दुनिया के कई ग्लेशियर पिछले हिस्युग के दौरान बने थे। ये ग्लेशियर हजारों सालों से अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों और ध्रुवीय क्षेत्रों में विद्यमान हैं। लेकिन अनेकों वाले समय में इस स्थिति में बड़ा बदलाव हो सकता है। एक ताजा अध्ययन से पता चलता है कि इस सदी के अंत तक दुनिया के आधे से ज्यादा ग्लेशियर गयब हो सकते हैं। स्विट्जरलैंड और बेल्जियम के वैज्ञानिकों ने कार्बन उत्सर्जन के विभिन्न परिदृश्यों के तहत ग्लेशियरों की संभावित क्षति का अनुमान लगाया है। उन्होंने पृथ्वी के सभी ग्लेशियरों को ध्यान में रखा जिनकी संख्या दो लाख है। अध्ययन से मिले अंकड़े डराने वाले हैं। यदि कार्बन का उत्सर्जन उच्चस्तर पर हुआ तो सभी ग्लेशियरों में से 54 प्रतिशत तक ग्लेशियर

इसके अलावा, ग्लेशियर के खत्म होने से मीठे पानी के संसाधन कम हो जाते हैं, जिस पर लाखों लोग पीने के पानी के लिए निर्भर हैं। ग्लेशियर से पानी की आपूर्ति में परिवर्तन जैव विविधता, उद्योग, कृषि और घरों के लिए पानी की उपलब्धता को प्रभावित करेगा। ग्रीनहाउस प्रभाव संकट

तापमान डेटा का अध्ययन किया। इस जानकारी और कंप्यूटर मॉडलिंग की सहायता से शोधकर्ता भविष्य में ग्लेशियर द्रव्यमान की क्षति के बारे में पूर्वानुमान लगाने में सक्षम हो गए। विभिन्न जलवायु परिदृश्यों के तहत 21वीं सदी में ग्लेशियर विकास का मॉडलिंग करके शोधकर्ताओं ने भविष्य के उत्सर्जन स्तरों के आधार पर परिणामों में भारी अंतर पाया। कम कार्बन उत्सर्जन के तहत 2100 तक ग्लेशियर अपने द्रव्यमान का 25 से 29 प्रतिशत खो सकते हैं। उच्च-उत्सर्जन परिदृश्य के तहत यह आंकड़ा 46 से 54 प्रतिशत तक बढ़ सकता है। इन चिंताजनक खुलासों के बावजूद शोधकर्ताओं ने अनुमानित ग्लेशियर विकास में अनिश्चितताओं को स्वीकार किया गया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि शोध में विशेष रूप से ग्लेशियरों की जांच की गई है, न कि बर्फ की चादरों की। ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका पर पाई जाने वाली बर्फ की चादरों में भूमि की बर्फ का 99 प्रतिशत और पृथ्वी के ताजा पानी का 68 प्रतिशत से अधिक हिस्सा मौजूद है।

लेखक विज्ञान मामलों के जानकार हैं।

मधुमक्खियों की कॉलोनियों का रखें खास ख्याल

मधुमक्खियां ठंडे खून वाली जीव, सर्दियों में गर्माहट हेतु अपनाएं न्यूजपेपर विधि, पराली

सर्दियों का मौसम मधुमक्खी-पालन के लिए एक चुनौतीपूर्ण समय हो सकता है, खासकर जब ठंडी हवाएं और बारिश कॉलोनियों को नुकसान पहुंचा सकती है। ठंडी हवाओं से बचाने के लिए हाइव्स को शरण स्थल पर रखना जरूरी है। पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी के माहिरों गुप्त्रीत सिंह मक्कड़ और रितु राज ने मधुमक्खियों को बचाने के लिए मधुमक्खी-पालकों को सुझाव दिए हैं:-

1. वन अवरोधक जैसे झाड़ियां या अस्थायी संरचनाएं एक प्रभावी उपाय साबित हो सकती हैं।

2. हाइव्स में किसी भी दरार या छेद को मिट्टी या टेप से बंद कर देना चाहिए, ताकि ठंडी हवाओं से गर्मी का नुकसान कम हो सके।

3. जो कॉलोनियां कमज़ोर होती हैं या जिनमें रानी नहीं होती, वे सर्दी में अधिक कठिनाई झेलती हैं। इन कॉलोनियों को मज़बूत कॉलोनियों के साथ जोड़ने के लिए 'न्यूज़पेपर विधि' का इस्तेमाल किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में एक अखबार पर छोटे-छोटे छेद बनाए जाते हैं, ताकि दोनों कॉलोनियों की गंभीर मिल जाए, लेकिन मक्खियां एक-दूसरे के सम्पर्क में न आएं।

इसके 2-3 दिन बाद अखबार के टुकड़ों को हटा दिया जाता है और दोनों कॉलोनियों मिल कर एक जुट हो जाती है।

4. मधुमक्खियां ठंडे खून वाली जीव होती हैं। उनका शरीर अपने पर्यावरण से प्रभावित होता है। सर्दी के मौसम में उन्हें गर्मी बनाए रखने के लिए हाइव्स के अंदर और बाहर इन्सुलेशन की आवश्यकता होती है। अंदरूनी पैकिंग में हाइव्स के खाली स्थानों में धान या गेहूं की पराली भरने से तापमान बनाए रखने में मदद मिलती है। कमज़ोर कॉलोनियों में सभी फ्रेम को एक ओर धक्का देकर बाकी खाली स्थान को भूसी से भरा

जाता है। बाहरी पैकिंग में हाइव्स के नीचे पराली की एक इंच मोटी परत बिछाई जाती है और फिर हाइव्स को प्लास्टिक की चादर से ढंक दिया जाता है, जिससे ठंडी हवाओं से होता है। खाद्य प्रबंधन के लिए 2:1 के अनुपात में चीरी और पानी का घोल

सर्दियों के मौसम में हरी पत्तेदार सब्जियों की खेती कैसे उगाएं

**पूजा रानी, सहायक वनस्पति फिजियोलॉजिस्ट, बागवानी विभाग,
कृषि महाविद्यालय, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार**



भारतवर्ष में
उगाई जाने वाली हरी पत्तेदार सब्जियों में पालक, मेथी, सरसों एवं बथुआ प्रमुख हैं, जोकि हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हरी सब्जियों के अंदर प्रचुर मात्रा में रेशा, प्रोटीन, वसा, विटामिन्स (विटामिन बी-2, विटामिन सी एवं विटामिन के) और खनिज पदार्थ (लोहा, कैल्शियम एवं फास्फोरस) मौजूद होते हैं। रेशे युक्त सब्जियां सस्ती व आसानी से उपलब्ध होने के साथ-साथ भोजन को पाचनशील, स्वादिष्ट, संतुलित व पौष्टिक बनाने में सहायता करती हैं। संतुलित आहार के अनुसार हमें प्रति दिन दैनिक आहार में 125 ग्राम हरी पत्तेदार सब्जियों लेनी चाहिए। अन्य सब्जियों की तुलना में हरी सब्जियों के सेवन से एनीमिया, कैंसर और हृदय से संबंधित बीमारियों से बचा जा सकता है। सर्दी के मौसम में हरी पत्तेदार सब्जियों की खेती किसानों के लिए मुनाफे का सौदा है, क्योंकि अन्य सब्जियों की तुलना में पत्तेदार सब्जियों की खेती में कम लागत आती है।

ये सब्जियों दो भागों में बांटी गई हैं :

* **शीतकालीन** : पालक, मेथी, विलायती पालक, सरसों व बथुआ आदि।

* **ग्रीष्मकालीन** : चौलाई, छोटी चौलाई, कुल्फा व पोई आदि।

मुख्य फसलों की उन्नत किस्में :

पालक : आलग्रीन, पूसा ज्योति, पूसा हरित, पूसा भारती, जोबनेरग्रीन, एच.एस.-23, वर्जिनिया स्वॉय व अर्ली स्मूथलीफ आदि।

मेथी : पूसा अर्ली बंचिंग, राजेन्ड्र क्रांति, हिसार सोनाली, हिसार मुक्ता, हिसार सुवर्ण, हिसार माधवी, आर.एम.टी.-1, अजमेर मेथी-1, अजमेर मेथी-2, पूसा कसूरी, लेम सलेक्शन-1, पंत रागिनी, गुजरात मेथी-1 आदि।

सरसों : पूसा साग-1

बथुआ : पूसा ग्रीन

भूमि का चुनाव

एवं तैयारी : इनकी खेती सभी प्रकार की मिट्टी में आसानी से की जा सकती है, लेकिन बलुई-दोमट मिट्टी व अच्छी खाद युक्त भूमि जिसका पी.एच. मान 6.5-7.5 के मध्य हो उत्तम मानी जाती है। भूमि को भली-भाँति 3-4 बार जोत कर मिट्टी को हल्का और भुरभुरा बना लेना चाहिए, अन्यथा अंकुरण प्रभावित होता है। प्रत्यक्ष जुताई के बाद सुहागा अवश्य लगाना चाहिए, जिससे खेत में नमी बढ़े।

जलवायु : पालक, मेथी, सरसों और बथुआ को मध्यम तापमान में पूरे वर्ष उगाया जा सकता है, लेकिन ठंड के मौसम में इनकी वानस्पतिक वृद्धि अच्छी होती है। अच्छी वृद्धि और उपज के लिए 15-20 डिग्री सैटीग्रेड तापक्रम उपयुक्त रहता है।

शरदकालीन फसल होने के कारण इसमें पाला सहन करने की क्षमता होती है। इनकी वानस्पतिक वृद्धि के लिए लंबे ठन्डे मौसम, आर्द्र जलवायु एवं कम तापमान उपयुक्त होते हैं।

बुवाई का समय : सर्दी के मौसम में हरी पत्तियों की उत्पादन के लिए अगस्त से दिसंबर बुवाई का उत्तम समय होता है।

बीज की मात्रा :

पालक व विलायती पालक

: 25-30 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर

देसी मेथी : 20-25

तत्पश्चात् बीजों की बुवाई करें। अच्छे उत्पादन के लिए बीज को 20-30 सैटीमीटर पंक्ति से पंक्ति की दूरी तथा 10 सैटीमीटर पौधे से पौधे की दूरी पर बुवाई करनी चाहिए। बीज बुवाई की गहराई 5 सैटीमीटर से ज्यादा नहीं रखनी चाहिए। आवश्यकता से अधिक या अधिक घने हो जाने पर कुछ पौधों को निकाल दें। पत्तियों की कटाई करते समय यह ध्यान रखें कि कटाई ज़मीन की सतह से 3-5 सैटीमीटर ऊपर से ही करें।

खाद एवं उर्वरक :

पालक में बुवाई से पूर्व अच्छी

गली-सड़ी हुई गोबर की

खाद या कम्पोस्ट खाद लगाभग 20-25 टन प्रति

हैक्टेयर के हिसाब से मिट्टी

में मिलाएं। पत्तियों वाली

सब्जियों के लिए नत्रजन

एक बहुत ही जरूरी तत्व है।

80 किलोग्राम नत्रजन,

40 किलोग्राम फास्फोरस

तथा 40 किलोग्राम पोटाश

प्रति हैक्टेयर के हिसाब

से मिट्टी में मिला देना

चाहिए। नत्रजन की एक

चौथाई मात्रा तथा फास्फोरस

एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई

से पूर्व अंतिम जुताई के समय

मिट्टी में मिला देनी चाहिए। शेष

नत्रजन प्रत्येक कटाई के बाद बराबर

मात्रा में छिड़काव करने से अधिक

उपज प्राप्त होती है।

मेथी में बुवाई से पूर्व अंतिम

जुताई के समय 10-15 टन प्रति

हैक्टेयर के हिसाब से गली-सड़ी

गोबर की खाद को मिट्टी में मिला

देना चाहिए। मेथी दलहनिया फसल

होने के कारण वायुमंडलीय नत्रजन को उपलब्ध करने में सक्षम होती है, इसलिए इस फसल को नत्रजन की कम आवश्यकता पड़ती है। नत्रजन 20-25 किलोग्राम एवं फास्फोरस 40-50 किलोग्राम एवं पोटाश 20-30 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से खेत में डाल देना चाहिए, नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा भूमि में अंतिम जुताई के समय मिला दें एवं बची मात्रा को प्रत्येक कटाई के बाद बराबर हिस्सों में बांट कर खड़ी फसल में छिड़का दें।

बथुआ में 20-25 टन गोबर की सड़ी हुई खाद या कम्पोस्ट, 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस एवं 20-30 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में अंतिम जुताई के समय मिला दें तथा शेष नत्रजन प्रत्येक कटाई के बाद बराबर मात्रा में टॉप ड्रेसिंग के रूप में देना चाहिए। शेष नत्रजन प्रत्येक कटाई के बाद बराबर मात्रा में छिड़काव करने से अधिक उपज प्राप्त होती है।

सिंचाई : सिंचाई सब्जियों की किस्म, मिट्टी की स्थिति व मौसम को ध्यान में रख कर की जाती है। बीज की बुवाई हमेशा नमी युक्त स्थिति में ही करनी चाहिए, जिससे अंकुरण अच्छी होता है। यदि बुवाई के समय खेत में पर्याप्त नमी न हो तो बुवाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई देनी चाहिए। सर्दियों के मौसम में 10-15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए।

शेष पृष्ठ 6 पर

**आपकी फसल की संभाल..... कोपल के साथ
क्लोडीकोप, रिप्प और मेटकोप, खरपतवारों पर फुलर्टॉप**

**आपकी फसल की संभाल..... कोपल के साथ
क्लोडीकोप, रिप्प और मेटकोप, खरपतवारों पर फुलर्टॉप**

COPL

Wheat Field

कृषि संसार

KRISHI SANSAR

मुख्य कार्यालय :
9—ए, अजीत नगर,
पटियाला—147001
(पंजाब)
मो. 98151—04575

कार्पोरेट कार्यालय :
के.डी. कॉम्प्लैक्स, गजशाला रोड,
नजदीक शेरे पंजाब मार्केट,
पटियाला—147001
(पंजाब)
मो. 90410—14575

वर्ष : 01 अंक : 01
तिथि : 01-02-2025

सम्पादक
जगप्रीत सिंह

सम्पादकीय बोर्ड
डॉ. डी.डी. नारंग
डॉ. जे.एस. डाल
डॉ. आर.एम. फुलझोले

जीना है तो पीने की आदत बदलें

शर्वत और लस्सी के देश भारत के अधिकांश लोग पश्चिमी बयार में बह कर खुद को 'मॉर्डन' साबित करने के लिए 'दूषित' शीतल पेयों का जमकर उपयोग कर रहे हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि इन शीतल पेयों के जरिए हम ऐसे कीटनाशकों को निगल रहे हैं, जिनके लंबे समय तक सेवन करने से कैसर, आयु और प्रजनन तंत्र को क्षति, जन्मजात शिशुओं में विकृति और इम्यून सिस्टम तक में खराबी आ सकती है।

कुछ समय पहले हुए एक शोध से यह बात सामने आई कि आकर्षक विज्ञापनों के जरिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जिन शीतल पेयों को आम भारतीयों के गले के नीचे उतार रही हैं, परन्तु बहुराष्ट्रीय कम्पनियां इस बात का खंडन करती रहती हैं। वास्तविकता क्या है, यह तो विस्तृत जांच-पड़ताल के बाद ही पता चलेगा।

गैर-सरकारी संगठन सैंटर फॉर साइंस एंड एन्वायरनमेंट (सी.एस.ई.) के अनुसार यह विदेशी कम्पनियां भारत के साथ भेदभाव बरत रही हैं। अमरीका और अन्य दूसरे देशों में इनके उत्पादों की गुणवत्ता का बारीकी से ध्यान रखा जाता है, जबकि भारत में यह पैसे बचाने के लिए कीटनाशकों का घोल जनता को पिलाते हैं।

ये पदार्थों में अपशिष्ट पदार्थों की मिलावट सिर्फ विदेशी कम्पनियों के इन शीतल पेयों तक ही सीमित नहीं है। कुछ वर्ष पूर्व बोतलबंद मिनरल वाटर से दूषित होने को लेकर भी काफी बवाल मचा था। उस समय सी.एस.ई. ने देशी-विदेशी विष्वात कम्पनियों के बोतलबंद पानी के दिल्ली में 17 और मुंबई में 13 उत्पादों की जांच कर उनमें लिन्डेन, डी.डी.टी., क्लोरोपायरीफॉस, मैलाथियान जैसे कीटनाशक पाए जाने की पुष्टि की थी।

इसके बाद सरकार को होश आया और उसने भारतीय मानक ब्यूरो की सिफारिश के आधार पर बोतलबंद पानी की शुद्धता बरकरार रखने के लिए खाद्य अपमिश्रण कानून में कुछ फेरबदल कर इन्हें लागू करवा दिया। हालांकि भारत के अधिकांश लोग नगर पालिका या नगर निगम द्वारा आपूर्ति किए जाने वाले जल अथवा नदियों के पानी को ही पीते हैं।

कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोगों से अनाज, सब्ज़ी

लोग अज्ञानतावश मानव सभ्यता के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं। इन्हें नहीं पता कि इस दूध को पीकर हमारे नौनिहाल, जो देश का भविष्य है, कितनी बीमारियों के चंगुल में फंस जाएंगे। डॉ. वर्गेज कुरियन ने भी भारत में 'आप्रेशन प्लड' शुरू करते समय यह नहीं सोचा होगा कि आम लोगों को दूध मुहैया करवाने के लिए वह जिन डेयरियों को खुलवाने की बात कह रहे हैं, उनमें बरती जाने वाली लापरवाही गाय और भैंसों के लिए तो जानलेवा साबित होंगी ही, साथ ही वहां से मिलने वाला दूध भी



आम आदमी के लिए मुफीद नहीं रहेगा।

भारत में डेयरियों की हालत ज्यादा अच्छी नहीं है। ज्यादा दूध लेने के चक्कर में गायों को हर साल गर्भवती करवा दिया जाता है, क्योंकि बच्चा होने के बाद 10 माह तक वह ज्यादा दूध देती है।

हर रोज उन्हें ऑक्सीटोसिन के इंजैक्शन लगाए जाते हैं, ताकि वे ज्यादा दूध दे सकें, परन्तु ये इंजैक्शन उनके लिए कितने हानिकारक हैं, यह दूध दुहने वाले और डेयरी मलिक शायद नहीं जानते। अगर उन्हें पता है तो वह और भी गंभीर अपराध कर रहे हैं, क्योंकि जानबूझ कर किसी को मौत के मुंह में धकेलना, भारतीय ही नहीं विदेशी कानून में भी अपराध की श्रेणी में आता है। ये सभी तरीके इन बेजुबान जानवरों के लिए तो खतरनाक हैं ही, साथ ही इनका दूध पीने वालों के लिए भी कम नुकसानदेह नहीं है।

इंडियन कौसिल ऑफ मैडीकल रिसर्च (आई.सी.एम.आर.) द्वारा 7 साल के शोध के बाद निकाले गए



और फल तक दूषित हो गए हैं। यदि इनको बिना सफाई किए हुए यूं ही खा लिया जाए, तो यह सेहत बनाने के बजाय उसका बेड़ा गर्क कर देंगे। ज्यादा पैदावार के चक्र में किसान रासायनिक खादों का बेतरतीबी से इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके दुष्परिणाम भी उनके सामने आने लगे हैं। भूमि बंजर हो रही है। उपज की गुणवत्ता में कमी आई है। जमीन से उपयोगी तत्व नष्ट हो रहे हैं, आदि-आदि।

कभी जहां इस देश में दूध-दहीं की नदियां बहा करती थीं, अब वहां हर चीज़ में मिलावट का आलम है। यहां तक कि दूध भी इससे अछूता नहीं रह गया है। थोड़े से लाभ के लिए लोग सेहत के लिए बेहद नुकसानदेह पदार्थों से नकली दूध तैयार करलोगों को पिला रहे हैं। यूरिया, साबुन और तेल जैसी खतरनाक चीज़ों को मिला कर बनने वाले इस दूध में दूध नाम की कोई चीज़ ही नहीं होती।

नतीजों में पाया गया कि जिस गाय के दूध को सर्दियों से हम पूर्ण आहार मान कर पीते चले आ रहे हैं, वह भी कीटनाशकों से भर गया है। उसमें भी डाईक्लोरो डाईफिनाइल ट्राइक्लोरोईथेन (डी.डी.टी.), हैक्साक्लोरो साइक्लोहैक्सेन (एच.सी.एच.), डेल्ड्रिन, एल्ड्रिन जैसे खतरनाक कीटनाशक भारी मात्रा में मौजूद हैं। रिपोर्ट कहती है कि यदि अल्पसे से पीड़ित किसी व्यक्ति को डेयरी का दूध और उसके उत्पाद खाने-पीने को दिए जाएं, तो उसे दिल का दौरा पड़ने की संभावना 2 से 6 गुना तक बढ़ जाती है।

कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से पैदा हुई इन स्थितियों को देखते हुए अनेक देशों ने तो इनका प्रयोग लगभग बंद ही कर दिया है और वे प्राकृतिक खाद और कीटनाशकों का उपयोग करने लगे हैं, पर भारत अभी पश्चिम की कदमताल कर रहा है। जिस तकनीक को वे उपयोग कर उसके बुरे प्रभावों को देख कर त्याग चुके हैं, भारतीय उनका अंधानुकरण कर रहे हैं।

विजय बहादुर सिंह,
कृषि स्वर्णकार नरेन्द्र
नटवाड़ीया, श्री करण नरेन्द्र
कृषि विश्वविद्यालय,
जौबनेर जयपुर (राज.)

गेहूं हमारे देश की प्रमुख खाद्यान्न फसल है जो देश के अधिकांश प्रदेशों में उगाई जाती है। फसल में कीटों, रोगों, सूत्रकृमियों तथा चूहों के प्रकोप के कारण 5-10 प्रतिशत हानि हो जाती है। जिससे उत्पादन की हानिकारक कीटों का उचित प्रबंधन करना अति अवश्यक है।

गेहूं का पत्ती माहू :

क्षति के लक्षण: इस कीट का शरीर कोमल एवं पीले हल्के रंग का होता है। इस कीट के निम्फ और वयस्क पौधों के कोमल भागों एवं बालियों का रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे फसल की उत्पादन एवं गुणवत्ता प्रभावित होती है। कीट का प्रकोप गेहूं, जौ, जई इत्यादि फसलों से ठंडे एवं बदली वाले मौसम में ज्यादा होता है।

प्रबंधन:

- फसल अवशोषों और खरपतवारों को नष्ट करें।



2. नाइट्रोजन उर्वरक को सही मात्रा एवं समय पर विभाजित करके दें।

3. कीटों की सतत निगरानी के लिए खेत में जगह-जगह पीले चिप-चिपे ट्रैप 10-13 प्रति एकड़ लगाना चाहिए।

4. माहू के प्राकृतिक शत्रु कीट परजीवी/परभक्षी जैसे-सर्पिंड फ्लाई, लेसविंग, लेडी बर्ड बीडल इत्यादि का संरक्षण करें।

5. खेत के चारों ओर मक्का/ज्वार/बाजरा की चार-चार पंक्तियां रक्षक फसल के रूप में लगाना चाहिए।

6. जब कीट संख्या अधिक क्षति स्तर ($\text{ई.टी. एल.}-10-15$ माहू/शूट) को पार कर जाये तब क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. नामक दवा की 1000 मिलीलीटर मात्रा 500-1000 लीटर पानी प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

गेहूं की दीमक :

क्षति के कारण: उत्तर एवं मध्य भारत में गेहूं फसल का प्रमुख हानिकारक कीट दीमक है। दीमक का प्रकोप बुवाई के तुरंत बाद और कभी-कभी फसल पकने की अवस्था पर होता है। ये कीट बढ़ते हुए पौधों की जड़ों तथा तनों को खाते हैं, यहां तक कि पौधों के मृत ऊतकों के सेलुलोज को खाते हैं। इसके प्रकोप से पौधे धीरे-धीरे सूखने लगते हैं और ऊपर खींचने पर आसानी से बाहर निकल आते हैं। बाली आने या फसल पकाने की अवस्था पर

गेहूं के प्रमुख हानिकारक कीट एवं उनका प्रबंधन

प्रकोप होने पर बालियां सफेद दिखाई देने लगती हैं। यह कीट असिंचित व हल्की भूमि में अधिक नुकसान पहुंचाता है।

प्रबंधन:

- गर्मियों के मौसम में खेत की गहरी जुताई करना लाभकारी होता है।
- बुवाई से पहले खेत में



सड़ी हुई देशी खाद ही प्रयोग करें। 3. देरी से बुवाई करने से बचना चाहिए।

4. खेती के आस-पास दीमक द्वारा बनाए गए दीमकोलों को खोदकर अथवा धुम्रक विष पौधे मिथाईल ब्रोमाइड से रानी दीमक को नष्ट कर देना चाहिए।

5. दीमक की कालोनी को नष्ट करने के लिए दीमकोलों के अंदर क्रूड ऑयल इमल्सन का प्रयोग करना चाहिए।

6. खेत में नीम के 200 किलोग्राम हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

7. बीजों का क्लोरोपार्सिफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. दवा की 3-4 मिलीलीटर/किलोग्राम बीज की दर से उपचार करना चाहिए।

8. खड़ी फसल में क्लोरो-पाइरोफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. दवा 4 लीटर प्रति हैक्टेयर सिंचाई पानी के साथ देना चाहिए।

गेहूं-धान का गुलाबी तना बेधक:

क्षति के लक्षण: गेहूं की फसल को मूर्ख रूप से नुकसान इल्ली द्वारा होता है। इल्ली तने में घुसकर

का प्रकोप फसल पर बादल की अवस्था में होने पर पौधों को टिलरों में (डेड हार्ट) बनकर पौधा मर जाता है अथवा पौधों की बालियां सफेद हो जाती हैं, जिन्हें आसानी से खींचा जा सकता है। वर्तमान में इस कीट का प्रकोप धान-गेहूं फसल प्रणाली में जहां गेहूं की फसल शून्य जुताई विधि बोई जाती है, में अधिक देखा

मैदानी क्षेत्र एवं उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र में भी देखा गया है। जड़ माहू हल्के रंग का होता है। यह कीट



गेहूं, जौ एवं इत्यादि फसलों के, भूमिगत तने एवं जड़ों को खाकर नुकसान पहुंचाता है। जड़ गेहूं कॉलोनी के रूप में रहकर जड़ों से रस चूसते हैं। प्रभावित पौधों की पत्तियां सूखने लगती हैं एवं ऐसे पौधों को ऊखाड़कर देखने पर रुट एफिड की कॉलोनी जड़ों में आसानी से देखी जा सकती है। प्रभावित पौधों के आस-पास चीटिया सक्रिय हो जाती है जो कि मीठे चिपचिपे पदार्थों को खाती है एवं रुट एफिड को स्वस्थ पौधों में फैलाने का कार्य करती है। अधिक तापमान और जीरो टिलेज तकनीक इस कीट की सक्रियता को और बढ़ाती है। इस कीट के द्वारा फसलों में 30 प्रतिशत तक नुकसान देखा गया है।

प्रबंधन :

- खेत में वयस्क पतंगे की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप (4-5) प्रति एकड़ लगायें।
- नाइट्रोजन उर्वरक को सही मात्रा एवं समय पर विभाजित करके दें।
- प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें जैसे एपेटेलेस, टीलेनोमस, मिरिडबग, ब्रेकोन, स्पी. कॉसिनेलिड्स, स्पाइडर्स, ह्यूमेनेटरेण एवं दीप्तेरण परसिताइड्स।
- पक्षियों के बैठने के लिए खेत में जगह-जगह टी आकार की 10 खूंटी प्रति एकड़ लगाना चाहिए।
- यदि फसल में कीट का प्रकोप ज्यादा हो तो क्यूनोलफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. दवा 1000



उत्तरकों को खाती है। इसके कारण फसल की प्रारंभिक अवस्था में ही तने में डेड हार्ट बन जाते हैं। प्रभावित पौधे पीले पड़े जाते हैं जिन्हें आसानी से उखाड़ा जा सकता है। पौधों को ऊखाड़ने पर इनके नीचे के सिरे पर कीट के मल के साथ गुलाबी रंग की इल्ली देखी जा सकती है। कीट

मिलीलीटर प्रति हैक्टेयर 500 लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।

जड़ का माहू (रुट एफिड)

क्षति के लक्षण: मध्य क्षेत्र विशेषकर मध्य प्रदेश में इस कीट की गंभीर समस्या है। इसके साथ गुलाबी रंग की इल्ली देखी जा सकती है। कीट

प्रबंधन

- गेहूं की फसल की बुवाई 15 नवम्बर के बाद करें।
- एक ही खेत में लगातार गेहूं की फसल न बोयें। खेत में फसल-चक्र अपनाएं और फसल चक्र में चना, अलसी या गोभी वर्गीय फसलें अवश्य लगायें।
- खेत में समय-समय पर सिंचाई अवश्य करते रहे, जिससे कीट का प्रकोप कम होता है।
- खेत में प्रोरोह मक्खी का प्रकार (डेट हर्ट) दिखाई देने पर साइपरमेथिन 10 प्रतिशत दवा की 550 मिलीलीटर मात्रा/हैक्टेयर 500-1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

गेहूं की बरुथी (ब्राउन व्हीट माइट)

क्षति के लक्षण: सूखे की अवस्था में बरुथी का प्रकोप अधिक होता है। बारानी और सिंचित दोनों क्षेत्रों जैसे राजस्थान, मध्यप्रदेश व हरियाणा में नुकसान करती है। इसके शिशु तथा वयस्क दोनों पत्तियों के ऊपरी व नीचे की सतह पर, पत्ती की शीर्ष तथा बालियों पर रस चूसकर नुकसान करते हैं। इस कीट का प्रकोप दिसम्बर से जनवरी माह में अधिक होता है और फसल पकने की अवस्था तक जारी रहता है। बहुत अधिक नुकसान की दशा में पौधों की पत्तियों, बालियों पर चांदी के रंग के धब्बे पड़ जाते हैं।

प्रबंधन : प्रोपरजित 57 प्रतिशत एस.सी. अथवा डाईकोफॉल 18.5 प्रतिशत ई.सी. नामक दवा 1. 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

सैनिक कीट (आर्मी वर्म) कट वर्म

क्षति के लक्षण: इस कीट का प्रकोप देश के मध्य क्षेत्र, उत्तर पश्चिमी एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में अधिक होता है। प्रारंभिक अवस्था में इल्ली पौधों की पत्तियों



को खाकर पत्तीविहीन बना देता है। इल्ली पत्तियों के किनारों से मध्य शिरा की ओर खाते हुए नुकसान करने के साथ-साथ पौधों के बढ़ने वाले भाग को भी नुकसान पहुंचाती है।

प्रबंधन:

- फसल अवशोषों और खरपतवारों को नष्ट करें।
- पक्षियों के बैठने के लिए खेत में जगह-जगह टी आकार की 10 खूंटी प्रति एकड़ लगाना चाहिए।
- खेत में कट वर्म के वयस्क पतंगे की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप (4-5) प्रति एकड़ लगायें।
- नाइट्रोजन उर्वरक की सही मात्रा को समय पर विभाजित करके दें।
- फसल में कीट का प्रकोप अधिक होने पर कार्बोरिल 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. दवा की 2 किलोग्राम अथवा डायक्लोरोवॉस 76 प्रतिशत ई.सी. दवा की 627 मिलीलीटर प्रति हैक्टेयर 500-1000 लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।

शेष पृष्ठ 6 पर



बरकरार रहे बगिया में बहार

रजनी अरोड़ा

सर्दी का असर इंडोर प्लांट्स पर भी पड़ता है, जैसे पत्ते झङ्ग जाना, रंग बदलना व फंगस अटैक। ऐसे में धूप व हवा प्रदान करने के मकसद से इन नाजुक पौधों को बाहर रखते हैं। वहाँ इनकी संभाल के लिए पूरी बगिया के बूटों की नियंत्रित सिंचाई, शेल्टर, पर्याप्त ह्यूमिडिटी और मल्विंग ज़रूरी है।

रंग-बिरंगे हरे-भरे इंडोर प्लांट्स आपकी बगिया और घर की शोरोड़ी में अहम भूमिका निभाते हैं। इनमें स्नेक प्लांट, मनी प्लांट, कॉलियस, क्रोटन, पाम, फिलोडेंड्रोन, जेड प्लांट, फाइक्स, लिलि, फर्न जैसे पौधे आते हैं। लेकिन सर्दियों में ज्यादातर पौधे डोमेंसी या रेस्ट पीरियड में चले जाते हैं। कम तापमान, सर्द हवा, कोहरा आदि का असर पौधों पर भी पड़ता है। इन्हें खराब होने से बचाने को सर्दियों में विशेष संभाल जरुरी है।

गुनगुनी धूप

जहाँ तक संभव हो इंडोर प्लांट्स को धूप में रखें ताकि इन्हें धूप से एनजी मिलती रहे। लम्बे समय तक अंधेरे में रहने से पौधे की जड़ें गलते लगती हैं। धूप से इनमें फोटो सिंथेसिस प्रक्रिया भी होती और इनके रंग फीके या बदरंग होने से बचेंगे। अगर धूप न हो तो पौधों को घर के अंदर तेज़ रोशनी के नीचे रखना फायदेमंद है।

बचाव के लिए शैल्टर

सर्दी और ठंडी हवा ज्यादा हो तो बाहर रखे इंडोर प्लांट्स को चादर, ग्रीन नेट या पॉलीथीन शीट का शेल्टर बना कर कवर कर सकते हैं। इससे ओस और मिट्टी से भी बचाव होगा, क्योंकि इनसे पोर्स बंद होने पर पत्ते जलने लगते हैं।

नियंत्रित पानी

सर्दियों में पौधों की मिट्टी में काफी दिन तक नमी बनी रहती है, इसलिए अपने इंडोर पौधों में पानी बहुत कम दें। ज्यादा पानी देने से जड़ें गलते लगती हैं, फंगस लगने का डर रहता है। पानी देने से पहले चैक कर लें कि पौधे की मिट्टी ऊपर 1-2 इंच सूखी हो।

नियमित गुडाई

सप्ताह में एक दिन पौधे की मिट्टी की 1-2 इंच तक गुडाई करें। गुडाई से पौधों में एयर सर्कुलेशन बढ़ता है, जिससे जड़ें मज़बूत होती हैं।

होती है।

ह्यूमिडिटी लेवल

कम ह्यूमिडिटी की वजह से फिलोडेंड्रोन जैसे पौधों के पत्ते खराब होने लगते हैं। इन्हें बचाने के लिए घर में ह्यूमिडिटी फायर लगाना चाहिए या फिर गमलों को इकट्ठे गुप में रख दें।

मल्विंग और रिपोटिंग

जड़ों को सर्दी से बचाने के लिए गमले की मिट्टी के ऊपर मल्विंग करें। इसके लिए छोटे-छोटे स्टोन, नारियल रेशों, नीम के पत्तों की लेयर बिछा सकते हैं। वहीं सर्दी में डोरमेंसी में चले जाने के कारण कई इंडोर प्लांट्स के पत्ते झङ्गने लगते हैं। जैसे क्रोटन में कई बार तो सिर्फ उसकी डंडी रह जाती है। पौधे को खराब होता सोच कर उसकी रिपोटिंग (गमला बदलना) या उसकी हार्ड प्रूनिंग (ज्यादा कटिंग) नहीं करनी चाहिए।

बल्ब सहेजना

कैलेडियम जैसे रंग-बिरंगे पत्तों वाले कई पौधों के पत्ते सर्दियों में खत्म हो जाते हैं। लेकिन उसका बल्ब मिट्टी में बना रहता है, जिसे सहेजने की ज़रूरत है।

नीम ऑयल स्प्रे

फंगस अटैक से बचाने के लिए पौधों के पत्तों और मिट्टी पर 10-15 दिन में एक बार नीम ऑयल स्प्रे करें। सर्दियों में इंडोर पौधों को ज्यादा फर्टिलाइज़ेर की ज़रूरत नहीं है।

शेष पृष्ठ 3 की

सर्दियों के मौसम में हरी पत्तेदार...

खरपतवार नियंत्रण : हरी पत्तियों वाली फसलों में समय-समय पर निराई-गुडाई करते रहना चाहिए, जिससे खरपतवार नियंत्रण अच्छा रहता है और पौधों के बढ़ने में कोई असुविधा नहीं होती। फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए 2-3 निराई-गुडाई की आवश्यकता होती है। खरपतवार नियंत्रण के लिए फ्लुकलोरालीन 1.0-1.5 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर (बसलीन)

और प्रौढ़ को मल पत्तियों से रस चूसते हैं और इसके अधिक प्रकोप से पत्तियां पीली पड़ कर मुरझा जाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए प्रारंभिक अवस्था में 2 प्रतिशत नीम के तेल व अधिक संक्रमण की स्थिति में साइपरमैथरीन 0.5 मिलीलीटर प्रति हैक्टेयर पानी में मिला कर 7-10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। छिड़काव से कटाई के बीच कम से कम 7 दिन का



बुवाई से पहले और बाकी खरपतवारनाशी बुवाई के बाद परन्तु खरपतवार जमाव से पहले छिड़काव करें। खेत में खरपतवारनाशी दवाई लगाने से पहले खेत में पर्याप्त नमी का होना आवश्यक है। फसल को खरपतवार मुक्त रखने से पत्तियों की अधिक पैदावार और गुणवत्ता प्राप्त होती है तथा कीड़ों का प्राकोप भी कम होता है।

अंतराल रखें।

5. पत्ती छेदक कीट : यह कीट पत्तियों में छेद कर नुकसान पहुंचाता है। संक्रमण के प्रारंभिक अवस्था में 2 प्रतिशत नीम के तेल का छिड़काव करें व अधिक संक्रमण होने पर क्विनलफॉस 0.5 मिलीलीटर प्रति हैक्टेयर पानी में मिला कर 7-10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

कटाई व उपज : हरी पत्तेदार सब्जियों की पहली कटाई बुवाई के लगभग 3-4 सप्ताह के बाद करें। इसके बाद 15-20 दिन के अंतर पर कटाई करनी चाहिए। हरी पत्तियों वाली सब्जियों में सामान्यता 4-8 कटाई की जाती है। यह भूमि की उर्वरता शक्ति, मौसम और फसल की किसी पर निर्भर करती है। हरी पत्तियों की औसत उपज एवं पैदावार फसल



की किसी तथा कटाई की संख्या पर निर्भर करती है।

पालक : 100-150 किंविटल प्रति हैक्टेयर

मेथी :

* देसी मेथी : 70-80 किंविटल प्रति हैक्टेयर तथा * कसूरी मेथी : 80-100 किंविटल प्रति हैक्टेयर

बथुआ : 30-40 टन प्रति हैक्टेयर

जब हरी पत्तेदार सब्जियां कम मूल्य में उपलब्ध हो, तो इन्हें ज्यादा मात्रा में खरीद कर धूप में सुखा कर इन्हें हाथों से रगड़ कर मोटा-मोटा चूरा बना लें और इन्हें एअर टाइट डिब्बे में रख लें। जब ताज़ा पत्तेदार सब्ज़ी उपलब्ध न हो, तब इनका इस्तेमाल हम वर्ष भर कर सकते हैं।



को नष्ट कर दें।

3. चूहों के प्राकृतिक शत्रुओं जैसे: उल्लू, बाज तथा अन्य पक्षियों के रहने व बैठने के लिए खेत में तथा के चारों ओर टी आकार की खूंटी लगायें/लकड़ी के बक्से रखें।

का उपयोग करते हुए चूहा नियंत्रण अभियान चलाने चाहिए।

चूहा नाशक विष द्वारा चूहा प्रबंधन की कार्य योजना :

- अभ्यास विष उत्पीड़न (प्रैक्टिस च्वाइज़न बैट) के साथ करें।

• चौथे दिन : खुले हुए बिलों का निरीक्षण कर इनमें जिक फॉस्फाइड 2.0 प्रतिशत की दर से प्रयोग करें। प्रथम दिन खेत में, मेड़ पर तथा खाली पड़ी भूमि में चूहों द्वारा बनाए गए बिलों को बंद कर दें। द्वितीय दिन खुले हुए बिलों का निरीक्षण कर इन में बिना विष का चारा 20 ग्राम प्रति बिल (98 भाग टूटे खाद्य तेल) की दर से प्रयोग करें।

• चौथे दिन : खुले हुए बिलों का निरीक्षण कर इनमें जिक फॉस्फाइड (96 भाग टूटे चावल + 2 भाग खाद्य तेल + 2 भाग जिंक फॉस्फाइड) 10 ग्राम प्रति जीवित बिल से उपचारित करें।

4. चेपा : इस कीट के शिशु

सरसों के मुख्य रोग एवं उनकी रोकथाम

मोहित कुमार, मनजीत सिंह, पूजा सांगवान एवं विनोद कुमार मलिक,
पादप रोग विभाग, चौ.च.सिं. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

भारत में सरसों की खेती राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, तामिलनाडु, आंध्र प्रदेश आदि राज्यों में अपेक्षाकृत अधिक होती है। इसका प्रयोग पशुओं के हरे चारे के लिए भी किया जाता है। पशु आहार के साथ-साथ बीज, तेल आदि के काम



भी ले सकते हैं। सरसों भारत की प्रमुख तिलहनी फसलों में आती है। सरसों की फसल में लगने वाली बीमारियां इसकी गुणवत्ता और पैदावार या उत्पादन पर प्रभाव डालती हैं। यदि किसान सरसों की बीमारियों को सही समय पर पहचान करके उसका प्रबंधन कर लें तो बीमारियों के नुकसान से बचा जा सकता है व उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। सरसों की मुख्य रोग एवं उनकी रोकथाम निम्नलिखित है :

आल्टरनेरिया ब्लाईट : इस रोग में पत्तों, तनों और फलियों पर गोल भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं तथा धब्बों में छल्ले से नज़र आते हैं। बाद में ये धब्बे बड़े होकर आपस में मिल जाते हैं और पत्ता जला



हुआ दिखाई देता है। शुरू में ये धब्बे भूरे तथा बाद में ये काले रंग के हो जाते हैं।

सफेद रतुआ : इस रोग के आरम्भ में सफेद या क्रीम रंग के पस्तुल या धब्बे से पत्ते के निचली तरफ दिखाई देते हैं व ऊपरी सतह पर पीले रंग के कील से दिखाई देते हैं। इस बीमारी का विकराल रूप लेने पर, तने व फूल बेढ़ंगे आकार या स्टैगहड़ आकार के हो जाते हैं।

फुलियां (डाऊनी मिल्ड्यू) : आरम्भ में इस रोग के कारण पत्तियों की निचली सतह पर बैंगनी भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं तथा ऊपरी भाग पीला दिखाई देता है। इन धब्बों में चूर्ण सा बन जाता है। बाद में ये धब्बे बड़े होकर आपस में मिल जाते हैं।

रोकथाम (सफेद रतुआ, आल्टरनेरिया ब्लाईट और फलिया रोग) :

* इन तीनों बीमारियों के लिए फार्मूदनाशकों की नियंत्रण क्षमता बढ़ाने के लिए प्रति 100 लीटर घोल में ट्राईटान (50 मिलीलीटर) या सेल्वेट-99 (10 ग्राम) नामक दवाई का इस्तेमाल अवश्य मिला लें।

* सफेद रतुआ, आल्टरनेरिया ब्लाईट और फुलिया रोग के प्रबंधन के लिए पहली फसल के बचे हुए अवशेषों को नष्ट कर दें।

* सरसों की फसल की बुवाई सिफारिश किए गए समय पर ही करें। दवा का छिड़काव पत्तों की निचली सतह पर भी अवश्य करना चाहिए।

* रोग के लक्षण नज़र आते ही मैन्कोजेब (डायथेन या इंडोफिल एम-45) नामक दवाई 600 ग्राम को 250 से 300 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अन्तर पर 3 से 4 बार छिड़काव करें।

फिलौड़ी व मरोड़िया : इस रोग के पौधों की स्वभाव के अनुसार बढ़वार नहीं हो पाती, जिससे पौधे झाड़ी के आकार के दिखाई देते हैं। इसमें पौधे बेढ़ंगे से हो जाते हैं। इस बीमारी में फूलों की जगह पत्तियां-सी बन जाती हैं।

रोकथाम : * रोग वाले पौधों को उखाड़ या निकाल दें।

* जहां यह रोग आता हो, वहां अगेती बुवाई न करें।

* रोग को फैलाने वाले कीड़ों को मारने वाली कीटनाशक दवाई का छिड़काव अवश्य करें।

तना गलन : इस रोग के लक्षण पौधे की बीज बनने की अवस्था में दिखाई देते हैं। आरम्भ में लम्बे धब्बे या लेजन तने के निचले हिस्से भूमि के पास दिखाई देते हैं। इस रोग में सफेद रंग की फफूंद पत्तों, तने व फलियों के बीज सूखा जाते हैं। रोग वाले पौधों में काले रंग के सकलेरोसिया बन जाते हैं।

रोकथाम :

* इस रोग के लक्षण बुवाई के 50 से 55 साल बाद दिखाई देते हैं।

* सरसों की बुवाई से पहले बाविस्टिन नामक दवाई 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज का उपचार करें।

* खेत में रोग के लक्षण दिखते ही 0.2 प्रतिशत बाविस्टिन नामक दवाई का छिड़काव करें।

मूंगफली और तिल : सर्दी के सुपरफूड्स

डॉ. विशाखा सिंह, डॉ. सुमित्रा मीना, सुश्री दीपाली चांदवानी, अखिल भारतीय समन्वित कृषिरत महिला, अनुसंधान परियोजना, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

सर्दियों का मौसम हमारी जीवन शैली में कई बदलाव लेकर आता है। ठंडी हवाओं के बीच हमारा शरीर ऊर्जा और गर्माहट की मांग करता है। ऐसे में हमारे खान-पान में मूंगफली और तिल का विशेष स्थान होता है। मूंगफली और तिल की खासियत है कि ये प्राकृतिक रूप से पोषण प्रदान करते हैं और किसी भी उम्र के लोगों के लिए फायदेमंद है। इनका नियमित सेवन न केवल सर्दियों में ठंडे से बचाव करता है, बल्कि पूरे शरीर को स्वस्थ और ऊर्जावान बनाए रखता है। यही कारण है कि इन्हें सर्दियों का सुपर फूड कहा जाता है।



मूंगफली - पोषण का खजाना

मूंगफली को प्रोटीन, हेल्ती फैट्स और कार्बोहाइड्रेट का उत्कृष्ट स्रोत माना जाता है। इसमें पाया जाने वाला विटामिन बी६, नियासिन और फोलेट हमारी कोशिकाओं को पोषण देते हैं। सर्दियों में मूंगफली का सेवन शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है और ठंडे से बचाव करता है।

मूंगफली की प्रति 100 ग्राम मात्रा में पोषण उपलब्धता

पोषक तत्व	मात्रा
ऊर्जा (Kcal)	520.07
प्रोटीन (ग्राम)	23.65
लिपिड (ग्राम)	39.63
कार्बोहाइड्रेट (ग्राम)	17.27
फाइबर (ग्राम)	10.38
कैरोटोनॉइड्स (मिलीग्राम)	82.80
कैल्शियम (मिलीग्राम)	54
लौह तत्व (मिलीग्राम)	3.44

स्वास्थ्य लाभ

1. हृदय को स्वस्थ रखता है : मूंगफली का सेवन करने से पथरी बनने का खतरा कम होता है। मूंगफली में कोलेस्ट्रॉल कम करने वाले गुण हैं, जो पिताशय में पथरी बनने से रोकते हैं, जोकि मुख्य रूप से कोलेस्ट्रॉल द्वारा बनता है।

2. त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है : मूंगफली में विटामिन ई की प्रचुर मात्रा होती है, जो त्वचा को स्वस्थ रखती है। यह सोरायरिसिस और एक्जिमा जैसे त्वचा रोगों में भी मदद करता है।

3. त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है : मूंगफली में एसिड और आर्जिनिन भी होते हैं, जो धमनियों की आंतरिक परतों को सुरक्षित रखते हैं और रक्त प्रवाह को बेहतर बनाते हैं। इसलिए, मूंगफली का सेवन करने से हृदय संबंधी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।

4. वजन कम करने में सहायक : शरीर के बढ़े हुए वजन को कम करने में मूंगफली प्रभावी विकल्प है, क्योंकि यह ओमेगा-३ फैटोएसिड का एक अच्छा स्रोत है। मूंगफली में जिंक होने से मांसपेशियों के क्षय का खतरा भी कम होता है।

5. त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है : मूंगफली में एसिड और आर्जिनिन भी होते हैं, जो धमनियों की आंतरिक परतों को सुरक्षित रखते हैं और रक्त प्रवाह को बेहतर बनाते हैं। इसलिए, मूंगफली का सेवन करने से हृदय संबंधी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।

6. कैरोटोनॉइड्स के लिए अच्छा : मूंगफली और आर्जिनिन भी होते हैं, जो प्रोटीन का एक भरपूर स्रोत है। मूंगफली में जिंक होने से मांसपेशियों के क्षय का खतरा भी कम होता है।

7. त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है : मूंगफली में एसिड और आर्जिनिन भी होते हैं, जो धमनियों की आंतरिक परतों को सुरक्षित रखते हैं और रक्त प्रवाह को बेहतर बनाते हैं। इसलिए, मूंगफली का सेवन करने से हृदय संबंधी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।

8. दृष्टि के लिए अच्छा : मूंगफली और आर्जिनिन भी होते हैं, जो धमनियों की आंतरिक परतों को सुरक्षित रखते हैं और रक्त प्रवाह को बेहतर बनाते हैं। इसलिए, मूंगफली में जिंक होने से मांसपेशियों के क्षय का खतरा भी कम होता है।

9. त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है : मूंगफली में एसिड और आर्जिनिन भी होते हैं, जो धमनियों की आंतरिक परतों को सुरक्षित रखते हैं और रक्त प्रवाह को बेहतर बनाते हैं। इसलिए, मूंगफली का सेवन करने से हृदय संबंधी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।

10. मांसपेशियों की क्षमता को बढ़ाता है : मूंगफली में पाए जाने वाले प्रोटीन मांसपेशियों को बेहतर काम करने में मदद करता है। प्रोटीन में मौजूद आवश्यक अमीनो एसिड ऊर्जा उत्पादन और मांसपेशियों की वृद्धि और मुरमत में भी काम करते हैं।

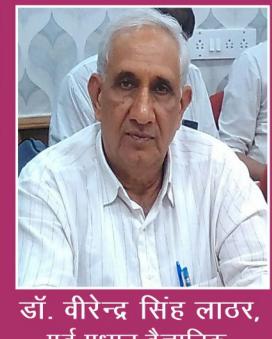
11. त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है : मूंगफली में एसिड और आर्जिनिन भी होते हैं, जो धमनियों की आंतरिक परतों को सुरक्षित रखते हैं और रक्त प्रवाह को बेहतर बनाते हैं। इसलिए, मूंगफली का सेवन करने से हृदय संबंधी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।

12. त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है : मूंगफली में एसिड और आर्जिनिन भी होते हैं, जो धमनियों की आंतरिक परतों को सुरक्षित रखते हैं और रक्त प्रवाह को बेहतर बनाते हैं। इसलिए, मूंगफली का सेवन करने से हृदय संबंधी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।

13. त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है : मूंगफली में एसिड और आर्जिनिन भी होते हैं, जो धमनियों की आंतरिक प

अमेरिकी कार्पोरेट खेती और कृषि विपणन मॉडल

भारतीय किसान, उपभोक्ता और राष्ट्रीय हितेषी नहीं



डॉ. वीरेन्द्र सिंह लाठर,
पूर्व प्रधान वैज्ञानिक,
आई.सी.ए.आर.—भारतीय कृषि
अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
(मो. 94168-01607)

देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है कि अंतरराष्ट्रीय दबाव और वैश्वीकरण की आड़ में निरस्त कृषि कानून और एप्रीकल्चर ड्राफ्ट पॉलिसी-2024 आदि के माध्यम से केन्द्र सरकार पिछले एक दशक से कार्पोरेट कम्पनियों के कृषि पर नियंत्रण को बढ़ावा और कानूनी संरक्षण देने और किसानों के सुरक्षा कवच समर्थन मूल्य पॉलिसी और कृषि उपज मंडी व्यवस्था को ध्वस्त करने की लगातार कोशिश कर रही है। इस राष्ट्रीय विरोधी घड़ंत्र का, देश के किसान पुरजोर विरोध कर रहे हैं। क्योंकि अमेरिकी वैश्वीकरण मॉडल कार्पोरेट खेती राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा व उपभोक्ता के लिए शोषणकारी साबित होगा।

राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध वैश्वीकरण पैरोकारों के दबाव में, सरकारी नीतिकार कार्पोरेट खेती से कृषि उत्पादन और किसानों की आय बढ़ाने व उपभोक्ता को सस्ती वस्तुएं दिलवाने आदि जैसे जो झूठे दावे कर रहे, जो बिल्कुल तथ्यहीन और वास्तविक सच्चाई से बहुत परे हैं।

भारत जैसे घनी आबादी और छोटी कृषि जोत वाले देश पर, कम आबादी और बहुत बड़ी कृषि जोत वाले पश्चिमी देशों के वैश्वीकरण मॉडल कार्पोरेट खेती और कृषि विपणन प्रणाली को थोपना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा और देश की आधी आबादी किसानों के लिए गंभीर खतरा साबित होगा। क्योंकि पश्चिमी देशों में कृषि सिर्फ व्यापारिक उद्देश्यों के लिए की जाती है। भारत में 2 गुना ज्यादा कृषि भूमि वाले अमेरिका जैसे देशों में 2

प्रतिशत से कम आबादी कृषि पर निर्भर है, जबकि भारत में कृषि व्यवसाय लगभग दो-तिहाई आबादी के लिए रोज़गार, संस्कृति और जीवनशैली है।

भारत में आजादी से पहले कार्पोरेट कम्पनियों का कृषि पर नियंत्रण था, जिनके आर्थिक लालच के कारण ही, देश को 1943-44 में बंगाल अकाल जैसी भयंकर त्रासदी से गुजरना पड़ा, जिसमें कार्पोरेट कम्पनियों के गोदाम अनाज से भरे होने के बावजूद, उस समय के बंगाल की 2 करोड़ आबादी में से, लगभग 30 लाख से ज्यादा लोग भूख से मर गए थे। आज भी भारत में मुफ्त मिलने वाला जीवनोपयोगी पीने का पानी कार्पोरेट कम्पनियों के लालच के कारण बोतल में 30-50 रुपए लीटर बिकता है। जबकि किसानों द्वारा उत्पादित दूध का दाम मात्र 50 रुपए लीटर और किन्तु, गाजर आदि के फलों के जूस के दाम 50 रुपए लीटर से भी कम है। कार्पोरेट कम्पनियां अपने लाभ को बढ़ाने के लिए साम - दाम - दंड - भेद की नीति अपनाते हुए किसी भी हद तक मानवता और राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध जा सकती है।

भारत में 1943-44 में बंगाल अकाल जैसी भयंकर त्रासदी और आजादी के बाद लगातार पड़े कई वर्षों के सूखे ने, देश की खाद्य सुरक्षा को पूरी तरह से आयात पर निर्भर बना दिया था। उस समय भारतीय सरकार अमेरिका से दान में गेहूं लेने के लिए मजबूर थी। ऐसी विकट परिस्थिति में देश ने हरित क्रान्ति की उन्नत कृषि तकनीक (बौनी गेहूं-धान की किस्में और रासायनिक उर्वरक आदि) को अन्तरराष्ट्रीय कृषि संस्थानों से आयात कर, भारत में 1965-75 के दौरान हरित क्रान्ति का आगाज किया, जिसकी बदौलत कृषि उत्पादन में कई गुना बढ़ातरी हुई और देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बना और पिछले 5 दशकों से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो सकी।

लेकिन अभी भी राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा को स्थाई कहना जल्दबाजी होगा, क्योंकि

वर्ष 2023-24 में रिकॉर्ड अनाज उत्पादन 332 मिलियन मीट्रिक टन और गेहूं नियात पर प्रतिबंध जैसे सभी प्रयासों के बावजूद, सरकारी गेहूं खरीद के 37 मिलियन मीट्रिक टन लक्ष्य के मुकाबले मात्र 26.6 मिलियन मीट्रिक टन की ही खरीद हो सकी। जो प्रमाणित करता है कि गेहूं उत्पादन देश की वार्षिक मांग के लगभग बराबर ही है। तिलहन और दलहन में देश अभी तक आत्मनिर्भर नहीं बन सका है। भारत ने घरेलू आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए वर्ष 2022-23 में 1,38,424 करोड़ रुपए और वर्ष 2023-24 में 1,31,967 करोड़ रुपए मूल्य के खाद्य तेल का आयात किया।

शुल्क मुक्त सस्ते पाम खाद्य तेल के भारी आयात से देश में चल रहे तिलहन मिशन को गहरा धक्का लगा है और खुले बाजार में सभी तिलहन फसलें समर्थन मूल्य से कम पर बिक रही हैं, जिससे तिलहन उत्पादक किसानों का बहुत नुकसान हुआ। उसके बावजूद कम्पनियों की मुनाफाखोरी की वजह से उपभोक्ता के लिए खाद्य तेल के दाम में कोई खास कमी नहीं हुई है। इसलिए किसान और उपभोक्ता को कार्पोरेट खेती और कृषि विपणन से सस्ते दाम पर खाद्य वस्तुओं के मिलने की आशा रखना तथ्यहीन और झूठे दावे हैं, क्योंकि कम्पनियों का मुख्य उद्देश्य अपने लाभ को लगातार बढ़ाना है।

देश में हुए विभिन्न सर्वे और अनुसंधान के अनुसार कृषि विपणन में उपभोक्ता द्वारा कृषि उत्पाद खरीद के दाम में 60-70 प्रतिशत हिस्सेदारी कम्पनियों और बिचौलिए की होती है और फसल उत्पादन करने वाले किसान को पूरी लागत लगाने और 5-6 महीने फसल की रखवाली करने के बाद भी, कुल बिक्री दाम का एक-तिहाई हिस्सा मिलता है, यानि कार्पोरेट कम्पनियों उपभोक्ता और किसान दोनों को लूट रही हैं। इफको जैसी सहकारी कम्पनी किसानों को धोखे से अपने नैनों यूरिया (4 प्रतिशत) की 500 मिलीलीटर की बोतल

250 रुपए में जबरदस्ती अपने दूसरे उत्पाद के साथ बेचती है, जिसके छिड़काव से फसलों को मात्र 20 ग्राम नाइट्रोजन मिलती है, जबकि मात्र 6 रुपए दाम के एक किलो परम्परागत यूरिया के छिड़काव से 460 ग्राम नाइट्रोजन मिलती है। उसके बावजूद वैज्ञानिक तौर पर बेकार नैनों यूरिया के प्रचार में पूरा सरकारी तन्त्र लगा हुआ है, जो कृषि के बारे में गलत सरकारी नीति के लक्षण है।

कार्पोरेट खेती से देश में कृषि उत्पादन बढ़ाने के दावे बिल्कुल तथ्यहीन हैं, क्योंकि कार्पोरेट कम्पनियां ज्यादा लाभ देने वाली उद्योगिक फसलों कपास, मक्का, चाय आदि को बढ़ावा देगी। कार्पोरेट कम्पनियां कम लाभ देने वाली जीवनोपयोगी खाद्य अनाज फसलों (गेहूं, धान, ज्वार, बाजरा, मूंग, मसूर, चने आदि) की खेती को कभी बढ़ावा नहीं देगी, जिसके कारण देश में अनाज फसलों के उत्पादन में भारी कमी होने से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा को खतरा बनने की संभावना है। बंगाल अकाल भी इन्हीं कारणों से हुआ था, जिसमें कम्पनी ने ज्यादा मुनाफे के लालच में, किसानों से धान की खेती की बजाय उद्योगिक फसल नील की खेती को बढ़ावा दिया। इहां ही नहीं, कार्पोरेट कम्पनियां जी.एम. व हाईब्रिड बीज तकनीक के माध्यम से बीज बाजार पर एकाधिकार जमा कर, महंगे हाईब्रिड बीज बेच कर किसानों का शोषण करेगी और देश की बहुमूल्य जैविक विविधता के लिए खतरा भानगी।

इसलिए सरकार को कार्पोरेट खेती जैसे अमेरिकन वैश्वीकरण मॉडल को त्याग कर, राष्ट्रीय हित में खाद्य सुरक्षा को स्थाई तौर पर सुनिश्चित करने के लिए समर्थन मूल्य गारंटी कानून बनाने और फसलों के उन्नत बीज, बेहतर प्रक्रियाएं लाने की जाएं और उपभोक्ता को उपभोक्ता का आगाज किया जाए। जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और रोज़गार के अवसर में बढ़ातरी होगी और देश खुशहाल बनेगा।

कृषि एवं कृषि संबंधित विषयों पर आधुनिक जानकारी लेने हेतु पढ़ें

कृषि संसार

साप्ताहिक समाचार पत्र

किसान भाईयों व डीलर/डिस्ट्रीब्यूटरों के लिए

चंदों में विशेष छूट

एक वर्ष 500/- रुपए

दो वर्ष 800/- रुपए

कृषि संसार (कृषि साप्ताहिक)

के.डी. कॉम्प्लैक्स, गजशाला रोड, पटियाला

KHETI DUNIYAN
TID - 62763351



चंदे भेजने हेतु QR कोड स्कैन करें।

पेमेंट करने के पश्चात् अपना डाक पता इस नंबर पर भेजें :

90410-14575